GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal

ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

हिंदी समाचार पत्रों में प्रकाशित फीचर लेखों का विश्लेषणात्मक अध्ययन आई नेक्स्ट और अमर उजाला समाचार पत्र के संदर्भ में

यज्ञेश पाल

छात्र, स्नातकोत्तर (पत्रकारिता)

पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर

ईमेल- palyagyesh@gmail.com

शोध निर्देशक

सागर कनौजिया

शिक्षक,

पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर

सारांश

यह शोध अध्ययन कानपुर के दो प्रमुख हिंदी समाचार पत्रों आई नेक्स्ट एवं अमर उजाला में प्रकाशित रूपक (फीचर) लेखों के स्वरूप, विषय-वस्तु, भाषा-शैली एवं प्रस्तुति का विश्लेषण करने पर केंद्रित है। समकालीन पत्रकारिता में फीचर लेख केवल सूचना प्रदान करने तक सीमित नहीं रह गए हैं, बल्कि वे पाठकों के साथ भावनात्मक एवं सामाजिक जुड़ाव स्थापित करने का एक प्रभावी माध्यम बन चुके हैं।

अध्ययन के अंतर्गत 15–30 दिनों की अवधि में प्रकाशित चयनित रूपक लेखों का सामग्री विश्लेषण पद्धति के माध्यम से परीक्षण किया गया है। इसमें प्रत्येक लेख को एक इकाई के रूप में लेते हुए उसके विषय, प्रकार, भाषा-शैली, संरचना एवं प्रस्तुति के आधार पर वर्गीकृत किया गया। अध्ययन में मात्रात्मक एवं गुणात्मक दोनों प्रकार के विश्लेषण का उपयोग किया गया, जिससे न केवल रूपक लेखों की आवृत्ति एवं प्रवृत्तियों का आकलन संभव हुआ, बल्कि उनकी अभिव्यक्ति एवं प्रभाव का भी गहन अध्ययन किया जा सका।

अध्ययन के निष्कर्ष यह संकेत देते हैं कि आई नेक्स्ट में रूपक लेखों की शैली अपेक्षाकृत अधिक अनौपचारिक, संवादात्मक एवं युवा-केन्द्रित पाई गई, जबकि अमर उजाला में भाषा अधिक औपचारिक, सूचनात्मक एवं पारंपरिक पत्रकारिता मूल्यों के अनुरूप रही। विषय-वस्तु के स्तर पर भी दोनों समाचार पत्रों में स्पष्ट अंतर देखने को मिला, जहाँ आई नेक्स्ट में शहरी जीवनशैली एवं मानव रुचि से संबंधित विषय प्रमुख रहे, वहीं अमर उजाला में सामाजिक, सांस्कृतिक एवं जनहित से जुड़े विषयों को अधिक महत्व दिया गया।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

यह अध्ययन इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि रूपक (फीचर) लेख समाचार पत्रों की संपादकीय नीति, लक्षित पाठक वर्ग एवं प्रस्तुति शैली को प्रतिबिंबित करते हैं। साथ ही, यह शोध हिंदी पत्रकारिता में फीचर लेखन के बदलते स्वरूप को समझने में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है।

मुख्य शब्द: रूपक लेख, सामग्री विश्लेषण, हिंदी पत्रकारिता, भाषा-शैली प्रस्तुति, पाठक अभिरुचि

परिचय

समकालीन हिंदी पत्रकारिता में समाचार पत्र केवल सूचना के वाहक नहीं रह गए हैं, बल्कि वे समाज के विभिन्न पक्षों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने वाले माध्यम के रूप में विकसित हुए हैं। विशेष रूप से रूपक (फीचर) लेखन ने समाचार पत्रों की सामग्री को अधिक रोचक, विश्लेषणात्मक एवं पाठक-केन्द्रित बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। रूपक लेख, सामान्य समाचारों से भिन्न होते हैं क्योंकि इनमें तथ्यों के साथ-साथ मानवीय संवेदनाएँ, विवरणात्मक शैली तथा कथा-तत्वों का समावेश होता है, जो पाठकों को विषय से जोड़ने का कार्य करते हैं।

हिंदी समाचार पत्रों में रूपक लेखन का स्वरूप समय के साथ परिवर्तित हुआ है। आज के प्रतिस्पर्धी मीडिया परिवेश में, जहाँ पाठकों का ध्यान आकर्षित करना एक चुनौती बन गया है, वहीं फीचर लेखन पाठकों के साथ संवाद स्थापित करने का एक प्रभावी माध्यम बनकर उभरा है। विभिन्न समाचार पत्र अपने लक्षित पाठक वर्ग, संपादकीय नीति तथा प्रस्तुति शैली के अनुसार रूपक लेखों का निर्माण करते हैं। इस कारण विभिन्न समाचार पत्रों में प्रकाशित रूपक लेखों की भाषा, विषय-वस्तु एवं प्रस्तुति में स्पष्ट अंतर देखने को मिलता है।

इसी संदर्भ में आईनेक्स्ट एवं अमर उजाला जैसे प्रमुख हिंदी समाचार पत्रों का अध्ययन विशेष महत्व रखता है। आईनेक्स्ट , एक टैब्लॉयड शैली का समाचार पत्र होने के कारण अपेक्षाकृत अधिक संवादात्मक, सरल एवं युवा-केन्द्रित भाषा का उपयोग करता है, जबकि अमर उजाला पारंपरिक पत्रकारिता मूल्यों के अनुरूप अपेक्षाकृत औपचारिक, सूचनात्मक एवं संतुलित शैली अपनाता है। इन दोनों समाचार पत्रों के रूपक लेखों का तुलनात्मक अध्ययन हिंदी पत्रकारिता में फीचर लेखन की प्रवृत्तियों को समझने में सहायक हो सकता है।

वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य हिंदी समाचार पत्रों में प्रकाशित रूपक लेखों के स्वरूप, विषय-वस्तु, भाषा-शैली एवं प्रस्तुति का विश्लेषण करना है। इसके अंतर्गत चयनित समाचार पत्रों में प्रकाशित रूपक लेखों का सामग्री विश्लेषण (Content Analysis) के माध्यम से अध्ययन किया जाएगा, जिससे यह स्पष्ट किया जा सके कि किस प्रकार विभिन्न समाचार पत्र अपने पाठकों की रुचि एवं अपेक्षाओं के अनुरूप फीचर लेखन की रणनीतियाँ अपनाते हैं।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

हाल के मीडिया अध्ययनों के अनुसार (जैसे Mencher, 2011), फीचर लेखन पाठकों के साथ जुड़ाव (engagement) बढ़ाने का एक प्रभावी साधन है, क्योंकि यह केवल तथ्यों की प्रस्तुति तक सीमित नहीं रहता, बल्कि अनुभव, भावना एवं संदर्भ को भी अभिव्यक्ति देता है। हालांकि हिंदी पत्रकारिता के संदर्भ में रूपक लेखन पर केंद्रित शोध अपेक्षाकृत सीमित है, विशेष रूप से क्षेत्रीय स्तर पर। इस दृष्टि से प्रस्तुत अध्ययन इस क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है।

अध्ययन की आवश्यकता

समकालीन हिंदी पत्रकारिता में सामग्री की प्रस्तुति एवं भाषा-शैली में निरंतर परिवर्तन देखा जा रहा है। इस परिवर्तनशील परिदृश्य में रूपक (फीचर) लेखन का महत्व विशेष रूप से बढ़ गया है, क्योंकि यह न केवल सूचना प्रदान करता है, बल्कि पाठकों के साथ भावनात्मक एवं बौद्धिक जुड़ाव भी स्थापित करता है। इसके बावजूद हिंदी समाचार पत्रों में प्रकाशित रूपक लेखों के स्वरूप, विषय-वस्तु एवं प्रस्तुति पर केंद्रित शोध अपेक्षाकृत सीमित है।

विशेष रूप से आईनेक्स्ट एवं अमर उजाला जैसे प्रमुख हिंदी समाचार पत्रों में रूपक लेखन की शैली, भाषा एवं विषयों में अंतर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है, किंतु इस अंतर का व्यवस्थित एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन अभी तक पर्याप्त रूप से नहीं किया गया है। वर्तमान अध्ययन इसी कमी को पूरा करने का प्रयास करता है।

इसके अतिरिक्त, आज के प्रतिस्पर्धी मीडिया वातावरण में पाठकों की बदलती रुचियों एवं अपेक्षाओं को समझना अत्यंत आवश्यक हो गया है। रूपक लेखन के माध्यम से समाचार पत्र किस प्रकार अपने लक्षित पाठक वर्ग को आकर्षित करते हैं, यह जानना पत्रकारिता अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण है। इस दृष्टि से यह अध्ययन न केवल सैद्धांतिक, बल्कि व्यावहारिक स्तर पर भी उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

अध्ययन का महत्व

यह अध्ययन हिंदी पत्रकारिता में रूपक (फीचर) लेखन की प्रवृत्तियों को समझने में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है। इसके माध्यम से यह स्पष्ट किया जा सकता है कि विभिन्न समाचार पत्र अपनी संपादकीय नीतियों, लक्षित पाठक वर्ग एवं प्रस्तुति शैली के अनुसार फीचर लेखन को किस प्रकार रूपांतरित करते हैं।

शैक्षणिक दृष्टि से, यह अध्ययन मीडिया एवं पत्रकारिता के विद्यार्थियों तथा शोधार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा, क्योंकि यह उन्हें हिंदी समाचार पत्रों में फीचर लेखन की संरचना, भाषा-शैली एवं विषय-वस्तु के विश्लेषण की स्पष्ट रूपरेखा प्रदान करता है। साथ ही, यह अध्ययन सामग्री विश्लेषण (Content Analysis) पद्धति के व्यावहारिक अनुप्रयोग को भी प्रदर्शित करता है।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

व्यावसायिक दृष्टिकोण से, यह अध्ययन पत्रकारों एवं संपादकों के लिए भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसके निष्कर्ष उन्हें यह समझने में सहायता कर सकते हैं कि किस प्रकार का फीचर लेखन पाठकों के साथ अधिक प्रभावी जुड़ाव स्थापित करता है।

साहित्य समीक्षा

समकालीन पत्रकारिता में रूपक (फीचर) लेखन का महत्व निरंतर बढ़ता जा रहा है। यह केवल तथ्यों की प्रस्तुति तक सीमित नहीं रहता, बल्कि पाठकों के साथ भावनात्मक एवं बौद्धिक जुड़ाव स्थापित करने का एक प्रभावी माध्यम भी बनता है। फीचर लेखन में कथात्मक शैली, मानवीय रुचि, विवरणात्मक भाषा तथा संदर्भात्मक प्रस्तुति का समावेश होता है, जो इसे पारंपरिक समाचार लेखन से भिन्न बनाता है।

मेल्विन मेन्चर (2011) ने अपनी पुस्तक *"समाचार लेखन और प्रतिवेदन"* में फीचर लेखन को एक ऐसी विधा के रूप में परिभाषित किया है, जो तथ्यों को रोचक, व्याख्यात्मक एवं कथात्मक शैली में प्रस्तुत करती है। उनके अनुसार, फीचर लेख पाठकों की रुचि बनाए रखने के लिए मानवीय तत्वों तथा कहानी कहने की शैली का प्रभावी उपयोग करते हैं।

इसी प्रकार विलियम ई. ब्लंडेल (1988) ने अपनी पुस्तक *"फीचर लेखन की कला और शिल्प"* (मूल: The Art and Craft of Feature Writing) में फीचर लेखन को एक रचनात्मक एवं संरचित प्रक्रिया बताया है। उनके अनुसार, एक प्रभावी फीचर लेख में स्पष्ट संरचना, गहन शोध तथा आकर्षक प्रस्तुति आवश्यक होती है। वे यह भी मानते हैं कि फीचर लेखन का उद्देश्य केवल सूचना देना नहीं, बल्कि पाठकों को विषय से जोड़ना भी है।

भारतीय संदर्भ में, केवल जे. कुमार (2010) ने पत्रकारिता में भाषा एवं शैली के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा है कि समाचार पत्रों की भाषा उनके लक्षित पाठक वर्ग एवं सामाजिक परिवेश के अनुसार परिवर्तित होती है। हिंदी पत्रकारिता में सरल, सहज एवं संप्रेषणीय भाषा का प्रयोग पाठकों के साथ प्रभावी संचार स्थापित करने में सहायक होता है।

इसके अतिरिक्त, जे. वी. विलानिलम (2005) ने मीडिया अध्ययन में सामग्री विश्लेषण (Content Analysis) को एक वैज्ञानिक एवं प्रभावी पद्धति के रूप में स्वीकार किया है। उनके अनुसार, यह विधि मीडिया सामग्री में निहित प्रवृत्तियों, पैटर्न एवं संरचनात्मक विशेषताओं को समझने में सहायक होती है। वर्तमान अध्ययन में भी इसी पद्धति का उपयोग करते हुए रूपक लेखों का विश्लेषण किया गया है।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

उपलब्ध साहित्य के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि फीचर लेखन पर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पर्याप्त शोध उपलब्ध है, किंतु हिंदी पत्रकारिता के संदर्भ में रूपक (फीचर) लेखों के तुलनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन अपेक्षाकृत सीमित हैं। विशेष रूप से आईनेक्स्ट एवं अमर उजाला जैसे प्रमुख हिंदी समाचार पत्रों के संदर्भ में इस प्रकार का अध्ययन बहुत कम देखने को मिलता है।

अतः प्रस्तुत शोध इस साहित्यिक अंतर (अनुसंधान अंतर) को भरने का प्रयास करता है, जिसमें हिंदी समाचार पत्रों में प्रकाशित रूपक लेखों के स्वरूप, विषय-वस्तु, भाषा-शैली एवं प्रस्तुति का तुलनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है।

शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन हिंदी समाचार पत्रों में प्रकाशित रूपक (फीचर) लेखों के स्वरूप, विषय-वस्तु, भाषा-शैली एवं प्रस्तुति के विश्लेषण पर आधारित है। यह शोध वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है, जिसमें मिश्रित पद्धति (मात्रात्मक एवं गुणात्मक) का उपयोग किया गया है। अध्ययन के लिए आईनेक्स्ट एवं अमर उजाला का चयन किया गया, जो हिंदी पत्रकारिता के प्रमुख समाचार पत्र हैं। नमूना चयन हेतु उद्देश्यपूर्ण नमूना पद्धति अपनाई गई, जिसके अंतर्गत 01 मार्च 2026 से 25 मार्च 2026 की अवधि में प्रकाशित कुल 43 रूपक (फीचर) लेखों का चयन किया गया, जिनमें अमर उजाला के 21 तथा आईनेक्स्ट के 22 लेख सम्मिलित हैं। अध्ययन में प्रत्येक रूपक लेख को एक इकाई के रूप में लिया गया है। डेटा संकलन के लिए चयनित समाचार पत्रों से रूपक लेखों को एकत्रित कर व्यवस्थित रूप से वर्गीकृत किया गया। शोध में सामग्री विश्लेषण (Content Analysis) पद्धति का उपयोग किया गया, जो मीडिया सामग्री के वैज्ञानिक एवं वस्तुनिष्ठ अध्ययन के लिए उपयुक्त मानी जाती है। विश्लेषण के लिए एक कोडिंग योजना तैयार की गई, जिसमें समाचार पत्र का नाम, तिथि, विषय, लेख का प्रकार, भाषा-शैली, संरचना, चित्रों की संख्या एवं पाठक-केन्द्रितता जैसे मानकों को शामिल किया गया। प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण दो स्तरों पर किया गया, जिसमें मात्रात्मक विश्लेषण के अंतर्गत आवृत्ति एवं तुलनात्मक आंकड़ों का अध्ययन किया गया, जबकि गुणात्मक विश्लेषण के अंतर्गत भाषा-शैली, प्रस्तुति एवं पाठक-केन्द्रितता की व्याख्या की गई। हालांकि यह अध्ययन सीमित समयावधि एवं दो समाचार पत्रों तक ही सीमित है, जिससे इसके निष्कर्षों के सामान्यीकरण में कुछ सीमाएँ हो सकती हैं, फिर भी यह हिंदी पत्रकारिता में रूपक लेखन की प्रवृत्तियों को समझने में महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है।

परिणाम

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

प्रस्तुत अध्ययन में आईनेक्स्ट एवं अमर उजाला में प्रकाशित कुल 43 रूपक (फीचर) लेखों का सामग्री विश्लेषण किया गया, जिसमें अमर उजाला के 21 तथा आईनेक्स्ट के 22 लेख सम्मिलित थे। अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि दोनों समाचार पत्रों में रूपक लेखों की संख्या लगभग समान रही, किंतु आईनेक्स्ट में हल्की बढ़त देखी गई। विषय-वस्तु के संदर्भ में अमर उजाला में स्वास्थ्य, शिक्षा, सामाजिक एवं ज्ञानवर्धक विषयों की प्रधानता रही, जबकि आईनेक्स्ट में स्वास्थ्य, मनोरंजन, करियर, तकनीक एवं जीवनशैली से संबंधित विषय अधिक विविधता के साथ प्रस्तुत किए गए। लेखों के प्रकार की दृष्टि से अमर उजाला में सूचनात्मक एवं साक्षात्कार आधारित लेख अधिक पाए गए, वहीं आईनेक्स्ट में सूचनात्मक के साथ-साथ परामर्शात्मक, ज्ञानवर्धक एवं जीवनशैली-आधारित लेखों का अधिक समावेश देखा गया। भाषा-शैली के स्तर पर दोनों समाचार पत्रों में सरल भाषा का व्यापक उपयोग पाया गया, तथापि अमर उजाला में कुछ स्थानों पर साहित्यिक एवं भावात्मक शैली भी देखने को मिली, जबकि आईनेक्स्ट की भाषा अधिक संवादात्मक एवं सहज रही। संरचना के संदर्भ में अमर उजाला में परिचयात्मक, साक्षात्कार एवं पारंपरिक फीचर संरचना प्रमुख रही, जबकि आईनेक्स्ट में नैरेटिव एवं डायमंड शैली का अपेक्षाकृत अधिक प्रयोग किया गया। प्रस्तुति के स्तर पर आईनेक्स्ट में चित्रों एवं दृश्य सामग्री का अधिक व्यापक उपयोग (कई मामलों में 5 से 10 तक) पाया गया, जबकि अमर उजाला में सामान्यतः सीमित (1 से 3) चित्रों का प्रयोग हुआ। पाठक-केन्द्रितता के संदर्भ में दोनों समाचार पत्रों के अधिकांश लेख पाठक-उन्मुख पाए गए, हालांकि अमर उजाला में कुछ लेख तटस्थ भी रहे। इस प्रकार, अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि दोनों समाचार पत्रों में रूपक लेखन की शैली, विषय-वस्तु एवं प्रस्तुति में स्पष्ट अंतर विद्यमान है, जो उनके लक्षित पाठक वर्ग एवं संपादकीय दृष्टिकोण को प्रतिबिंबित करता है।

चर्चा

उपरोक्त निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि दोनों समाचार पत्रों की रूपक (फीचर) लेखन शैली उनके संपादकीय दृष्टिकोण एवं लक्षित पाठक वर्ग के अनुसार भिन्न है। आईनेक्स्ट में विषयों की विविधता, आधुनिकता तथा प्रस्तुति की आकर्षकता यह संकेत करती है कि यह मुख्यतः युवा एवं शहरी पाठकों को ध्यान में रखकर सामग्री प्रस्तुत करता है। अधिक संख्या में चित्रों का उपयोग, डायमंड संरचना तथा जीवनशैली-आधारित विषय इसकी पाठक सहभागिता की रणनीति को सुदृढ़ बनाते हैं।

इसके विपरीत, अमर उजाला में विषय अपेक्षाकृत अधिक संतुलित एवं सामाजिक सरोकारों से जुड़े हुए पाए गए। सूचनात्मक एवं साक्षात्कार-आधारित रूपक लेख यह दर्शाते हैं कि यह समाचार पत्र सूचना-प्रधान एवं पारंपरिक पत्रकारिता मूल्यों को प्राथमिकता प्रदान करता है।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

मेल्विन मंदर (2011) के अनुसार, फीचर लेखन का प्रमुख उद्देश्य पाठकों के साथ भावनात्मक एवं बौद्धिक जुड़ाव स्थापित करना होता है। प्रस्तुत अध्ययन में आईनेक्स्ट के रूपक लेखों में यह तत्व अधिक स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है, जबकि अमर उजाला में सूचना एवं विश्लेषण के मध्य संतुलन को अधिक महत्व दिया गया है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि हिंदी समाचार पत्रों में रूपक (फीचर) लेखन की शैली, विषय-वस्तु एवं प्रस्तुति समाचार पत्र की संपादकीय नीति एवं लक्षित पाठक वर्ग के अनुसार परिवर्तित होती है। आईनेक्स्ट में रूपक लेख अधिक आकर्षक, दृश्य-प्रधान एवं आधुनिक विषयों पर आधारित पाए गए, जबकि अमर उजाला में यह अधिक संतुलित, सूचनात्मक एवं सामाजिक सरोकारों से जुड़ा हुआ रहा।

यह अध्ययन यह भी दर्शाता है कि रूपक लेखन हिंदी पत्रकारिता में पाठकों के साथ जुड़ाव स्थापित करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम बन चुका है, जहाँ प्रस्तुति शैली, भाषा एवं विषय चयन महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हालांकि, दोनों समाचार पत्रों में "सरल भाषा" का व्यापक उपयोग यह संकेत करता है कि हिंदी पत्रकारिता में पाठक-अनुकूल भाषा की महत्ता निरंतर बढ़ रही है। यह प्रवृत्ति व्यापक मीडिया परिवेश में पठनीयता एवं सुगम्यता की आवश्यकता को दर्शाती है। तथापि, यह निष्कर्ष सीमित समयावधि एवं नमूने पर आधारित हैं, अतः इनके सामान्यीकरण में सावधानी अपेक्षित है।

संदर्भ सूची

मेल्विन मेन्चर (2011). समाचार लेखन और प्रतिवेदन (News Reporting and Writing). न्यूयॉर्क: मैक्ग्रा-हिल.

विलियम ई. ब्लंडेल (1988). फीचर लेखन की कला और शिल्प (The Art and Craft of Feature Writing). न्यूयॉर्क: प्लूम.

केवल जे. कुमार (2010). जनसंचार: सिद्धांत और व्यवहार. नई दिल्ली: जयको पब्लिशिंग हाउस.

जे. वी. विलानिलम (2005). मास कम्युनिकेशन इन इंडिया: एक समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण (Mass Communication in India: A Sociological Perspective). नई दिल्ली: सेज पब्लिकेशन्स.